दिनांक 18.07.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

बापदादा है श्रेष्ठ तक़दीर की तस्वीर बनाने वाला

सबका शुभचिन्तक सबका कल्याण करने वाला

बाप ने देखी है बच्चों के श्रेष्ठ तक़दीर की लकीर

श्रीमत अनुरूप बच्चे बनाते तक़दीर की तस्वीर

आत्म स्मृति को बच्चों तुम शक्तिशाली बनाओ

भाई भाई की दृष्टि वृत्ति को अन्तर्मन में जगाओ

दिव्य गुणों का श्रृंगार अपने जीवन में दिखाओ

रूहानी दृष्टि वृत्ति द्वारा आकर्षणमूर्त कहलाओ

सबका देहाभिमान मिटाकर आत्मभान जगाओ

निर्वाण निर्मान और निर्माण की स्मृति जगाओ

अपने आपको तीनों शब्दों का स्वरूप बनाओ

तीन स्मृतियों से तस्वीर को आकर्षणमय बनाओ

हो जाओ वाणी से परे हर मान का त्याग करो

विश्व के निर्माण का संस्कार अपने अन्दर भरो

एकमत एक वृत्ति एक रूहानी दृष्टि अपनाओ

शुभचिन्तक बन सबका सहयोग करते जाओ